आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था का वेदान्तिक प्रजातंत्रीय समाधान

डॉ. अपर्णा धीर[1], *असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं* **प्रो. बलराम सिंह**[2], *निदेशक, इन्स्टिट्यूट ऑफ ऐड्वान्स्ट साइन्सीस, डार्टमोथ*

Email – [1]adhir@inads.org, [2]bsingh@inads.org

पृष्ठभूमि

लोकतंत्र आधुनिक जीवन-प्रणाली का दर्शन माना गया है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जिसमें दो लोकतांत्रिक परम्पराओं का वास है। (1) लोकतंत्र की आधुनिक संस्कृति 1940 में नेहरूवादी आदर्श 'गणतंत्र' के रूप में प्रचारित हुई और (2) 'प्रजातंत्र' के रूप में। 'प्रजातंत्र' लोकतंत्र की कल्पना का वैदिक अग्रदूत है। आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में 'गणनायक' को ही सम्पूर्ण शक्ति व अधिकार होते हैं जबकि वेदान्तिक प्रजातंत्र में समस्त प्रजाजन को अपनी बात रखने का अधिकार था। वस्तुतः कला-कौशल (शिल्पकार) प्रजा स्वावलम्बी होने के कारण अपने मत रखने के लिए स्वतन्त्र हैं। आत्मनिर्भर प्रजा के मतों के आधार पर की गई प्रजातांत्रिक-राजनीतिक व्यवस्था में प्रजा की प्रबल भूमिका को जागृत करना ही उद्देश्य है।

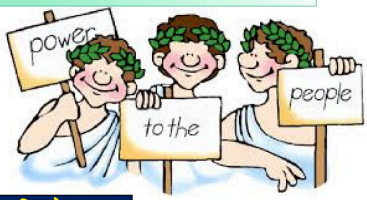

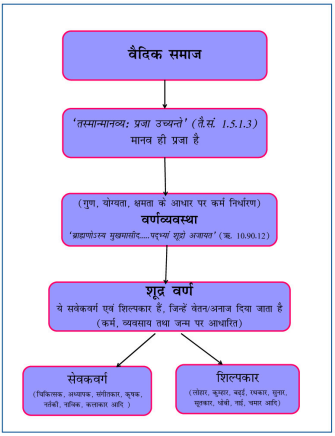

विषय-विश्लेषण

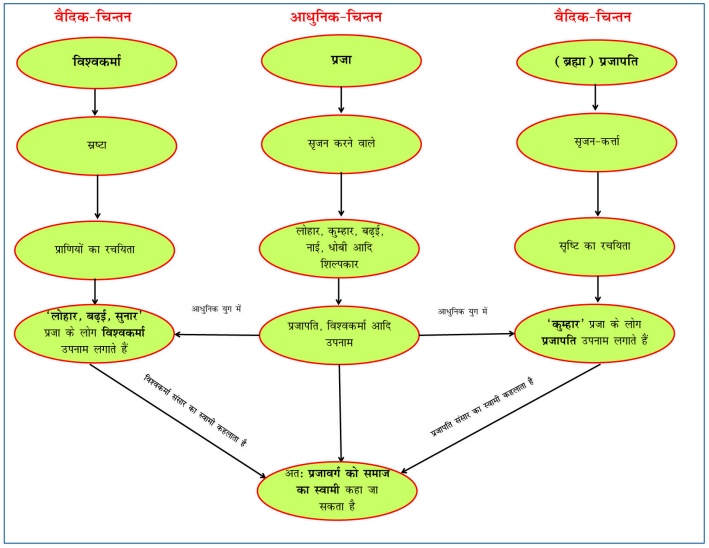

आधुनिक-स्थिति

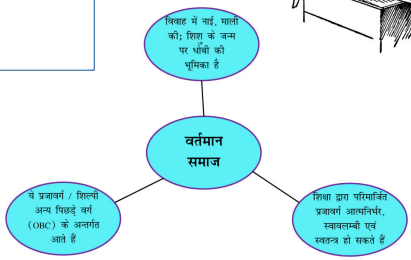

निष्कर्ष एवं भावी-योजना

प्रजावर्ग शिक्षा के आधार पर आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी एवं स्वतन्त्र हो सकते हैं। प्रजा को इन जीवन-लक्ष्यों की प्राप्ति हो, यही प्रजातंत्र का उद्देश्य है। हमें ऐसी शिक्षा-प्रणाली विकसित करनी चाहिए, जिससे आधुनिक प्रजा यथा- जैव-प्रौद्योगिक, इंजीनियर, अध्यापक, उद्यमी, सूचना-प्रौद्योगिक, संगणक-व्यावसायिक, वैद्य आदि अपनी सर्जनात्मक सेवाओं द्वारा आत्मनिर्भर होकर मुक्त हो। इसी आधार पर समाज की स्वार्थपरक राजनीतिक-व्यवस्था को रोकना सम्भव है।

आभार

This research was in part supported by Uberoi Foundation